www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का सकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 88 अंक 3
कार्तिक शुदी दौज
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
5 नवम्बर से 21 नवम्बर 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879

प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

अंक सौजन्य- आर्य समाज मोती कटरा, जयपुर

महर्षि स्वामी दयानन्द का 130 वाँ निर्वाण दिवस

'आर्य समाज का गौरव'

जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार चलाना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि स्वदेश व विश्व की उन्नति का ऐसा साधन और नहीं है।

हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है और आगे भी होता रहेगा, उसकी उन्नति तन, मन धन से सब जन मिलकर प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द के अनुसार संसार में बुद्धिपूर्वक जीने की कला यह है कि संसार के सूक्ष्म नियमों व तत्वों को जानकर सदा अपने समीप प्रभु के होने का विश्वास करें तथा प्रभुदत्त जीवनी शक्ति देने वाले सभी साधन रूपी पदार्थों का धन्यवाद पूर्वक प्रयोग करते हुए समाज सेवा से योगसाधना द्वारा आत्मा को आनन्दित भी करें।

दीपावली के ज्योतिर्मय पर्व पर
सभी आर्य जनों को हार्दिक शुभकामनाएँ

यज्ञ से किसी दूसरे पदार्थो को अपना समझनें की प्रवृति नष्ट हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

हे महामानव प्यारे ऋषिवर हो तुम्हें शत् शत् प्रणाम (श्रद्धाञ्जलि)

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के 130वें महानिर्वाण दिवस के अवसर पर उन्हें शत् शत् नमन करती हुई श्रद्धा पूर्वक श्रद्धा रूपी सुमन उनके चरणों में सादर समर्पित करती हूँ। भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि पुनः- पुनः इस भारत की पावन धरती पर ऐसी परम पवित्र आत्माएँ अवतरित होती रहें।

महर्षि के अनुसार वह ईश्वरेच्छा से इस धरती के आँचल आने और ईश्वर की इच्छा से उस परम पिता परमात्मा की ज्योति में विलीन हो गये। 30 अक्टूबर 1883 ई. सायंकाल की गोधूली वेला में स्वामी जी ने क्षौर कर्म कराया। बैठ कर ईश्वर का ध्यान किया। वेदपाठ करने के पश्चात् सबको अपने पीछे खड़ा कर प्राणायाम किया। फिर करवट से लेकर यह शब्द बोले ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की। एक महा दीपक लाखों-लाखों लोगों के हृदय में वेदज्ञान की ज्योति जगाकर संसार को आलोकित कर सूर्यास्त के साथ सदा-सदा के लिये बुझ गया। महर्षि दयानन्द के निर्वाण के बाद जो दीप जले उन समाज के प्रति बहुत तडप थी। उनके निर्वाण ने नास्तिक गुरु दत्त को आस्तिक बना दिया। स्वामी की मृत्यु का हश्र देख कर वह चिल्ला उठे। यह सत्य है कोई महान अदृश्य शक्ति है जिसे संसार के लोग परम पिता परमात्मा के नाम से जानते हैं। जिसे महर्षि ने बताया कि उसका मुख्य नाम ओ३म है। इसी ओ३म नाम का महर्षि, जन जन को साक्षात्कार कराना चाहते थे ताकि घोर अंधकार में भटक रही आत्माएँ जीवन के सत्य-पथ पर चल सकें।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक कल्याण में आहूत कर दिया। राष्ट्र प्रेम के सामने उन्हें मोक्ष भी तुच्छ नजर आया। एक महन्त के कहने पर कि तुम 18-18 घंटे की समाधि ले सकते हो तो मोक्ष के हकदार हो। स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया जब मेरे देशवासी लाखों की संख्या में दासता के डंक को झेल रहे हैं तो मैं अकेला मोक्ष को कैसे स्वीकार कर सकता हूं।

उन्होंने बताया कि जीवन का अंतिम लक्ष्य मुक्ति है। मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करने के किसी कठोर तप तथा गृहस्थ को छोड़ने की आवश्यकता नहीं। मोक्ष का सम्बन्ध आत्मा से है न कि शरीर से। आत्मा की पवित्रता मोक्ष का मुख्य द्वार है जिसे गृहस्थ में रहकर भी प्राप्त किया जा सकता है। परोपकार की एक-एक सीढी चढ़ते चढ़ते जीवन के अंतिम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। ईश्वर स्वयं भी तो हर पल यहीं कर्म ही तो कर रहे है। वह अपना प्रतिबिम्ब हर मानव में देखना चाहता है।

मानव जीवन ईश्वर का दिया एक अनमोल उपहार है। जिन्दगी को जीना सीखें। जिसको जीना आ गया उसका लोक तथा परलोक सुधर गया। यही जीवन कला तो महर्षि समझाने व सिखाने आये थे।

'हे मानव एक दिन भी जी, अटल विश्वास वन कर जी'
'कल नहीं तू जिन्दगी का, आज बन कर जी'

इसी उद्देश्य से उन्होंने वेदो का पुनरूद्धार किया। वेदों की ओर लौट चलो का आह्वान किया। वेदो का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना तथा आचरण करना सब आर्यो के लिये अनिवार्य बताया। समाज में व्याप्त सभी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फैंका। देश को स्वराज्य का नारा दिया। नारी तथा अछूतोद्धार कर देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। संक्षेप में महर्षि क्या थे। एक वाक्य में वह सब थे जो कोई दूसरा नहीं था।

वह सच्चे योगीराज, वेदज्ञ, अखण्ड ब्रह्मचारी, देशभक्त, निर्भीक गुरु भक्त, परोपकारी सत्यवादी तथा दयालुता की प्रतिमा थे। महर्षि गुणों की खान थे, सदगुणों ने उन्हें अपना निवास स्थान बना रखा था। वह सदगुणों के संगम थे।

महापुरुषों का जीवन वह कीर्ति स्तम्भ हैं जो राह से भटके लोगों को कुमार्ग से हटा कर संमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता हैं। उनके पावन निर्वाण दिवस के अवसर पर संकल्प करें कि उनके निर्देशानुसार सच्चे मानव बनने का प्रयत्न करेंगे जो संयमी मार्ग है। आज आर्यसमाजियों की वस्तु स्थिति पर व्यंग्य करते हुए किसी ने लिखा है-

सूक्त संगठन को पढ़ के लिखते रहे। पाठ शान्ति का पढ़ के झगड़ते रहे।
गैर को न अपना बना ही सके। अपनों से बिछुड़ने से क्या फायदा।

प्रतिवर्ष दीपावली पर्व आता है और चला जाता है परन्तु महर्षि का निर्वाण दिवस जन जीवन में नव ज्योति का संचार कर जाता है। इसे स्वीकार करें यही होगी उस महामानव को सच्ची श्रद्धाञ्जलि।

- अरूणा सतीजा (टंकाराश्री)

आर्य समाज, हिरण मगरी, उदयपुर

विजयादशमी पर्व हर्षोल्लास से सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से दिनांक 13 अक्टूबर, 2013 को विजयादशमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज, राष्ट्र के पतन का मुख्य कारण भारतीय वैदिक संस्कृति से जन का दूर हटना है। जब -जब वैदिक संस्कृति के अनुसार जीवन रहा तब-तब भारत शिखर पर रहा। राम राज्य का उदाहरण देते हुए डॉ. आर्य ने कहा कि श्रीरामचन्द्र जी ने पूरे भारत को वैदिक संस्कृति के अनुसार एक सूत्र में जोड़कर रखा। उस समय देव, वैदिक, वानर और रक्ष राष्ट्र का समन्वय किया। वैदिक संस्कृति भोग-योग का समन्वय, लोक परलोक की सिद्धि करवाने वाली है। राक्षस संस्कृति भोगवादी संस्कृति है। वैदिक संस्कृति में देना है जबकि रक्ष संस्कृति में छीनना है।

सत्संग से पूर्व पं. रामदयाल, पं. इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में पर्व विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। इसके यजमान एडवोकेट अरविन्द त्यागी, श्रीमती नूतन चौहान, श्रीमती ग्यारसी देवी आर्या, श्री नागेश्वर आर्य आदि थे। श्री इन्द्र देव पीयूष श्री भगवतीलाल सोनी ने भजन प्रस्तुत किये। श्री हीरालाल आर्य ने तबले पर संगत की। डॉ. शारदा गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन कवि भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है– स्व का त्याग।

www.thearyasamaj.org

वैदिक संस्कृति के सूर्य - स्वामी दयानन्द सरस्वती

आचार्य राम गोपाल शास्त्री, प्राचार्य फतेहपुर शेखावाटी, सीकर

भारतीय वैदिक आर्य संस्कृति विश्व की प्राचीनतम तथा महानतम संस्कृति है। वर्तमान युग में इसके रक्षण, प्रचार एवं प्रसार में जिन महापुरुषों का विशिष्ट योगदान है वे हैं- स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी राममूर्ति एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन। धर्म एवं संस्कृति के प्रसार में यद्यपि इन सभी का योगदान महत्वपूर्ण है किन्तु स्वामी दयानन्द का इनमें विशिष्ट स्थान है। यद्यपि दयानन्द अंग्रेजी नहीं जानते थे और वे विदेशों में नहीं गये किन्तु वे शास्त्रों के विलक्षण विद्वान थे। सरस्वती की अपार कृपा उन पर थी। सर्वोच्च शास्त्र 'वेदों' का उन्होंने जमकर प्रचार किया। उन्होंने वेदों के संस्कृत में तथा हिन्दी में भाष्य लिखे। भाष्य की पद्धति सिखाने के लिए उन्होंने 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' ग्रंथ लिखा। असत्य का खण्डन तथा सत्य का मण्डन करने के लिए उन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा।

अष्टाध्यायी व्याकरण पर उन्होंने कई ग्रंथ लिखे। षोडश संस्कारों की पुनर्स्थापना के लिए 'संस्कार विधि' पञ्चमहायज्ञों के प्रचार के लिए 'पञ्चमहाय विधि' लिखी। यज्ञ का प्रचार प्रसार किया। मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है तथा मानव मात्र को 'उपनयन सूत्र' धारण करने का अधिका है, यह घोष दयानन्द ने किया। अस्पृश्यता का विरोध करने वाले सर्वप्रथम महापुरुष थे स्वामी दयानन्द। अंग्रेजों की परतंत्रता के विरूद्ध भी उद्घोष करने वाले प्रथम महामानव थे- दयानन्द।

प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रणीत वैदिक सिद्धांतों का, वैदिक सनातन संस्कृति का जहाँ स्वामी दयानन्द ने प्रचार-प्रसार किया वहीं उन्होंने धर्म के नाम पर पाखण्डी ठगों द्वारा फैलाई जा रही अधर्म लीला, पाखण्ड लीला एवं पोपलीला का जमकर विरोध किया। सत्य का प्रकाश एवं असत्य का खण्डन करना उन्होंने अपना जवीन ध्येय माना। असत्य का खण्डन एवं सत्य का मण्डन करने में उन्हें स्वार्थी लोगों के घोर विरोध का सामना करना पड़ा, अनेक बार उन पर प्राणघातक हमले हुए, अनेक बार उन्हें विष दिये गये और अन्ततः सन् 1883 में तीव्र संखिया विष देकर ही मारा गया किन्तु उन्होंने कभी प्राणों की परवाह नहीं की। प्राण देकर भी उन्होंने सत्य का प्रचार किया और पाखण्ड का खण्डन किया। पाखण्डी लोगों ने अनेक मनगढंत शास्त्र बनाकर भारत के प्राचीन यशस्वी महापुरुषों के यश को कलंकित करने का प्रयास किया है। स्वामी दयानन्द ने आदर्श महापुरुषों के यश को मलिन करने की दुश्चेष्टा का विरोध किया।

'वेदों की ओर लौटो' का नारा देकर उन्होंने वेदों का पुनरूद्धार किया। ''वेदों को शंखासुर लेकर पाताल लोक में चला गया। अब वेद पृथ्वी पर हैं ही नहीं। यह बड़ा भारी असत्य फैलाया गया। दयानन्द वेदों को छपवाया और उन्हें जन साधारण तक पहुँचाया। हर धर्म, हर जाति के स्त्री-पुरुष वेदों को पढ़ सकते हैं। यह घोष दयानन्द ने किया। उन्होंने कहा-वेद मानव मात्र के लिए है।

भारतीय आर्य (हिंदु) संस्कृति विश्व की तेजस्विनी, जीवंत संस्कृति रही है किन्तु यह अपना तेज खोकर दीन-हीन अवस्था को प्राप्त हो गई। यह संस्कृति अपने प्राचीन वैभव को पुनः प्राप्त करे और दैव संस्कृति आसुरी संस्कृति के प्रभावों से मुक्त होकर अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करे, यह उच्चतम स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित हो। इसी के लिए स्वामी दयानन्द जीवन भर प्रयासरत रहे।

आईये स्वामी दयानन्द के अवदानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए गायें- दयानन्द हम तेरे उपकार
भूले थे, न भूलेंगे।

संक्षिप्त समाचार

आर्य समाज नसोपुर तह. कोटकासिम जिला अलवर का 38वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 17-18 अक्टूबर को महात्मा च्यवन मुनि की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध भजन उपदेशक, विद्वान एवं सन्यासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर राजस्थान प्रान्तिय सभा के महामंत्री श्री अमरमुनि का उद्बोधन हुआ।

मंत्री आर्य समाज नसोपुर (अलवर)

****

आर्य समाज किशनगढ़ बास अलर में श्री हरिपाल शास्त्री मंत्री जिला सभा अलवर की हिरक जयन्ती समारोह बड़े उत्साह से मनाया गया। जिसमें आचार्य सत्प्रिय जी तिजारा, श्री महेन्द्र शास्त्री भू.पू. विधायक, श्री अमर मुनि मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री जगदीश प्रसाद आर्य प्रधान जिला सभा अलवर, श्री विनोदीलाल दीक्षित, किशोरी लाल जी आदि जिले के बड़ी संख्या में आये हुए महानुभावों द्वारा हरिपाल शास्त्री का अभिनन्दन किया एवं उनके दीर्घ आयु की कामना की।

- डॉ. सोमपाल सिंह, मंत्री आर्य समाज, किशनगढ़बास

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का शीत कालीन प्रान्तिय योग-व्यायाम प्रशिक्षण एवं व्यक्तिव विकास शिविर बालोतरा (बाड़मेर) में दिनांक 24 से 31 दिसम्बर 2013 तक लगाया जायेगा

सभी आर्य महानुभावों, आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं को सूचित करते हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य वीर दल राजस्थान प्रान्त का शीतकालीन शिविर आर्य समाज बालोतरा (बाड़मेर) के सहयोग से दिनांक 24 से 31 दिसम्बर को लगाया जा रहा है।

सभी आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में बच्चों व युवाओं को शिविर मे भेजकर स्वस्थ, बलिष्ठ, चरित्रवान् व विद्वान बनावें। इस विशाल शिविर के सफल आयोजन हेतु अधिकाधिक आर्थिक एवं सामग्री यथा- अनाज, घी, तेल, दाल, दूध दही, टेन्ट, साउण्ड आदि का मुक्तहस्त से सहयोग प्रदान कर राष्ट्र के नव-निर्माण में सहभागी बनें।

(विस्तृत कार्यक्रम आगामी अंक में)

- सत्यवीर आर्य, क्षेत्री संचालक, आर्य वीर दल

यज्ञ से प्रलोभन, आत्मश्लाधा के आकर्षण से मनुष्य सर्वथा पृथक हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत यशस्वी प्रधान

डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के 1950 के वार्षिक साधारण अधिवेशन में आर्य समाज गुलाबसागर जोधपुर का प्रतिनिधि बन कर प्रथम बार सम्मिलित हुआ। मेरी आयु उस समय मात्र 22 वर्ष की थी। राजस्थान की सभा देश की सर्वाधिक तीन प्राचीन सभाओं में तीसरा स्थान रखती है। प्रथम पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ, ततपश्चात् उत्तर प्रदेश (तब इसका नाम उत्तर-पश्चिम प्रांत था) का गठन हुआ इसके बाद राजस्थान सभा का। यह सब उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की घटनाएँ है।

अजमेर के शारदा परिवार का आर्य समाज के स्थापना काल से ही सम्बन्ध रहा है। ऋषि दयानन्द की अन्त्येष्टि में शामिल होने वाले और उनकी अर्थी को कंधा देने वाले दीवान बहादुर हरविलास शारदा परोपकारणी सभा के पचास वर्षो से अधिक समय तक मंत्री रहे। उनके चचेरे भाई रामविलास शारदा वर्षों तक वैदिक मंत्रालय के अधिशासी अधिकारी रहे तथा प्रांत में धर्म प्रचार कार्य को भी देखते रहे। उनके बड़े पुत्र सूरजकरण शारदा प्रतिनिधि सभा के मंत्री रहे, किन्तु वे अल्पायु में परलोकवासी हो गये। मैं जब 1950 में सभा में प्रथम बार गया तो देशभक्त कुं. चांदकरण शारदा सभा के प्रधान थे। शारदा जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनका सार्वजनिक जीवन आर्य समाज के अतिरिक्त राजनीति में भी दखल रखता था। वे आरम्भ में कांग्रेस में रहे तथा 1920 के असहयोग आंदोलन में जेल गये। बाद में इस संस्था की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति से क्षुब्ध होकर हिन्दू महासभा में चले गये। यहां वीर सावरकर से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। कालान्तर में भारतीय जनसंघ में प्रविष्ट हुए, किन्तु 1957 में उनका निधन हो गया। जब चांदकरण शारदा सभा के प्रधान थे तो मंत्री पद पर वैदिक मंत्रालय के प्रबंधक आर्य विद्वान पं. भगवान स्वरूप न्यायभूषण वर्षों तक रहे। ये मूलत: उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के थे। शाहपुराधीश राजाधिराज सर नाहरसिंह के पुत्र राजाधिराज उम्मेदसिंह ने उन्हें अपने राज्य में उच्च पद दिये। वहीं से वे मंत्रालय के मैनेजर बन कर अजमेर आ गये थे। सभा में प्रधान पदका 1951 में उस समय परिवर्तन आया जब अलवर अधिवेशन में अजमेर के कर्मवीर पं. जियालाल को सभा का प्रधान चुन लिया गया। पं. जियालाल भी मूलत: उत्तर प्रदेश के निवासी थे। परन्तु बी.बी. एण्ड सी.आई. रेलवे में नौकरी करने के कारण वे अजमेर के स्थायी निवासी बन गये। उन दिनों कतिपय कारणों से अजमेर का मुख्य समाज केसरगंज सभा से असम्बद्ध था। पं. जियालाल इस समाज के कर्ताधर्ता थे। साथ ही अजमेर में डी.ए.वी (दयानन्द कॉलेज नाम है) संस्थाओं का नियंत्रण भी वे ही करते थे। जब पं. जियालाल प्रधान बने तो मंत्री पद पर पं. रमेश चन्द शास्त्री निर्वाचित हुए। शास्त्रीजी भी मूलत: उत्तर प्रदेश के थे। उनका अध्ययन महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ था। उन्होंने कुछ काल तक शाहपुरा में अध्यापन भी किया था। अब वे अजमेर में खादी भंडार का संचालन करते थे। कालांतर में वे दयानन्द कॉलेज अजमेर में संस्कृत के प्रवक्ता भी रहे। शास्त्री जी का राजनीति के प्रति रूझान था। सभा के साधारण अधिवेशन में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आर्य समाज को राजनीति में प्रविष्ट होकर चुनाव लड़ना चाहिए। परन्तु अन्य लोगों का मत था और वह ठीक ही था कि एक धर्मान्दोलन होने के कारण आर्य समाज का स्वरूप व संगठन सार्वदेशिक सार्वभौमिक है और वह संस्था की हैसियत से किसी देश विशेष की राजनीति में नहीं उतर सकती। बेशक व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक आर्य समाजी अपनी रूचि को राजनैतिक संस्था में जाये और चुनाव लड़े। पं. जियालाल का प्रधान काल 1951 से 1954 तक रहा।

कतिपय कारणों से सभा प्रधान पं. जियालाल के प्रति आर्य लोगों में असंतोष फैला और सभा के कोटा जंक्शन के अधिवेशन में डॉ. मथुरालाल शर्मा (मूलत: कोटा निवासी) को बहुमत से प्रधान चुन लिया गया। डॉ. शर्मा इतिहास के प्रकाण्डविद्वान थे। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में अध्ययन करते समय उन्होंने अपने सहपाठी पं. वासुदेव शरण अग्रवाल तथा अन्य छात्रों के सहयोग से विश्व विद्यालय परिसर में आर्य समाज की भी स्थापना की थी। वे कोटा स्टेट के चीफ सैकेटरी रहने के पश्चात हर्बर्ट कॉलेज कोटा तथा महाराजा कॉलेज जयपुर के प्राचार्य रहे। बाद में वे राजस्थान के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर बने। हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के प्रगल्भ विद्वान होने के साथ-साथ इन तीनों भाषाओं के वे ओजस्वी वक्ता थे। जिन्होनें उनके भाषण सुने हैं वे इस तथ्य के साक्षी हैं कि उनके जैसे अद्‌भुत वक्ता बहुत कम थे। डॉ. शर्मा निष्ठावान आर्य समाजी थे। जब वे सरकारी सेवा से निवृत हुए तो सभा प्रधान के नाते वर्षों तक उन्होंने प्रांत में सर्वत्र भ्रमण कर धर्म प्रचार में योगदान दिया। यद्यपि कोटा अधिवेशन में पं. जियालाल के पक्ष का समर्थन परोक्ष रूप में वहां उपस्थित सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान राजगुरू धुरेन्द्र शास्त्री ने किया तथापि प्रधान पद पर डॉ. ही निर्वाचित हुए।

डॉ. शर्मा से मेरा व्यक्तिगत परिचय अंत तक रहा। उन्होंने मेरे प्रथम प्रकाशित ग्रंथ 'ऋषि दयानन्द और राजा राममोहन राय के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन' (प्रकाशन काल 1957) की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। डॉ. शर्मा जब शिक्षा विभाग के निदेशक थे, उन्होंने संस्कृत को हाई स्कूल में अनिवार्य बना दिया। इससे तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद बड़े बिगड़े और उन्होंने राजस्थान के शिक्षा मंत्री से इसकी सफाई मांगी। इस पर डॉ. शर्मा ने मौलाना को कहला भेजा कि राज्यों की शिक्षा पद्धति इस राज्य का आन्तरिक मामला है, इसमें केन्द्र को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

डॉ. शर्मा का प्रधान काल 1968 तक रहा। इस बीच स्वामी व्रतानन्द जी तथा कोटा के डॉ. राजबहादुर जी भी एक दो साल के लिए प्रधान पद पर रहे। स्वामी व्रतानन्द जी गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के आचार्य और संचालक थे अत: वे सभा को पूरा समय नहीं दे सके। 1968 के शिवगंज अधिवेशन के आबूरोड अधिवेशन में इन पंक्तियों के लेखक को मंत्री पद दिया गया। यह अच्छा संयोग रहा कि इसी वर्ष मेरा स्थानान्तरण सरकारी कॉलेज पाली से गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर हो गया जहाँ सभा का कार्यालय दयानन्द आश्रम केसरगंज में था। अब अजमेर

www.thearyasamaj.org

रहते हुए सभा का दैनन्दिन कार्य देखना मेरे लिए अधिक सुविधापूर्ण हो गया। सभा के मुख पत्र आर्य मार्तण्ड का संपादन वर्षो तक पं. रामसहाय जी शर्मा उपदेशक, सभा कर रहे थे। उनकी कार्य व्यस्तता देख कर मैंने 'मार्तण्ड' का संपादन कार्य किया और इस पत्र के कई विशेषांक प्रकाशित किये।

अगले वर्ष बांदीकुई में सम्पन्न सभा के वार्षिक अधिवेशन में मुझे पुन: मंत्री तथा पं. भगवान स्वरूप जी को प्रधान चुना गया। 1971 के जोधपुर अधिवेशन में अलवर के कर्मठ नेता श्री छोटूसिंह जी को प्रधान और मुझे मंत्री निर्वाचित किया गया। श्री छोटूसिंह जी युवावस्था से ही सभा में सक्रिय रहे थे। उनके कार्यकाल में 1972 में आर्य महासम्मेलन का 11वाँ अधिवेशन अलवर में मॉरिशस के तत्कालीन प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यह अधिवेशन कई दृष्टियों से अभूतपूर्व रहा। उनके अंग्रेजी भाषण का तत्काल हिन्दी अनुवाद मैंने मंच पर किया जिसकी सर्वत्र सराहना हुई। इस वर्ष के चुनाव में अलवर के पं. हेतराम सभा के मंत्री चुने गये।

1980 में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की दयानन्द पीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद पर चले जाने के कारण मेरा प्रान्तीय सभा में जाना कम हो गया। बाद में ब्यावर के कर्मठ कार्यकर्ता पं. रविदत्त वैद्य भी प्रधान रहे। इस प्रकार 1950 से आरम्भ मेरा सभा से बना सम्पर्क 1980-81 तक समाप्त हो गया। केवल एक बार जयपुर अधिवेशन में मैं आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर के प्रतिनिधि रूप में शामिल हुआ। विगत वर्षो में सभा के प्रधान पद पर पं. विद्यासागर शास्त्री (अलवर) तथा स्वामी सुमेधानन्द जी आदि योग्य व्यक्ति प्रधान पद को अलंकृत करते रहे। तथापि विगत वर्षो में आन्तरिक विवादों ने सभा के कार्य में अवरोध पैदा किये। वर्तमान अधिकारियों से प्रांत के आर्यो को बड़ी आशाएँ है।

315, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

आर्य समाज, आबूरोड़ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आबूरोड़ एवं श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय आबूरोड़ अपना वार्षिकोत्सव दिनांक 21 से 23 नवम्बर 2013 को मनाने जा रहा है। अत: आपसे निवेदन है कि आप समारोह में पधारकर हमारा और विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करेंगे।

कार्यक्रम:-

गुरूवार दिनांक 21 नवम्बर, 2013

प्रात: 8.00 से 10.30 बजे तक .....यज्ञ एवं प्रवचन

दोप. 2.30 से 4.30 बजे तक .....भजन एवं प्रवचन

शुक्रवार दिनांक 22 नवम्बर, 2013

प्रात: 8.00 से 10.30 बजे तक .....यज्ञ एवं प्रवचन

दोप. 2.30 से 4.30 बजे तक .....भजन एवं प्रवचन

शनिवार दिनांक 23 नवम्बर, 2013

प्रात: 8.00 से 10.30 बजे तक .....यज्ञ एवं प्रवचन

दोप. 2.30 से 4.00 बजे तक ..... प्रतिभा सम्मान समारोह

मोतीलाल आर्य, प्रधान

संयुक्त परिवारों के बच्चे ज्यादा अनुशासित व संस्कारवान-कौल

आज आर्य समाज जिला सभा कोटा के एक प्रतिनिधि मंडल ने डीएससीएल के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक व रेजीडेन्ट हेड श्री के के कौल से उनके कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की, जिसमें आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, जिला मंत्री कैलाश बाहेती, आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस दुबे, रेल्वे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त भार्मा, आर्य विद्वान अग्निमित्र, आर्य विद्वान रामदेव शर्मा, आर्य समाज तलवंडी के पूर्व प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक आदि उपस्थित थे। जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने श्री कौल को आर्य समाज द्वारा कोटा में किये जा रहे धार्मिक, आध्यात्मिक व जन– कल्याणकारी कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

श्री के.के. कौल ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी में संस्कारों की महती आवश्यकता है। पुराने समय में हमारे यहां संयुक्त परिवार का प्रचलन था। परिवार में रहकर बालक अपने बुजुर्गों से संस्कार सीखता था। आज संयुक्त परिवारों का विघटन हो गया है तथा भागदौड़ भरी जिंदगी होने के कारण माता–पिता बच्चों पर पूरा ध्यान देने में असमर्थ हैं। इन परिस्थितियों में सामाजिक संस्थाओं का दायित्व है कि वो बालकों को सदाचारी व संस्कारवान बनाने में सहयोग करें। आर्य समाज अपनी स्थापना से ही इस दायित्व को निभा रहा है। आर्य समाज कोटा के द्वारा वेद प्रचार समिति के माध्यम से विद्यालयों में छात्रों को जो वेदों से संबंधित जानकारी दी जा रही है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि समाज में जो अराजकता, भ्रष्टाचार व दुराचार नजर आ रहा है, उसका कारण संस्कारों का न होना है। शिक्षा केवल पढने लिखने का नाम नहीं है इसका संबंध व्यक्ति के चरित्र के निर्माण से तथा संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास से है। वर्तमान की शिक्षा में संस्कारों का समावेश उतना नहीं है जितना होना चाहिये। इसलिए आर्य समाज का यह और भी दायित्व बन जाता है कि वह संस्कार के साथ कुरीतियों से भी छात्रों को सजग करें, अंधविश्वास दूर करें।

इसलिए मैं विशेष तौर पर यह कहना चाहूंगा कि आर्य समाज स्कूलों से जुड़कर अपने कार्यकम के माध्यम से वेदों के प्रचार तथा कुरीतियों का निवारण का कार्य अधिक से अधिक करें, ताकि भावी पीढ़ी सजग हो सके। –अरविन्द पाण्डेय

शोक संदेश

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी के लघुभ्राता श्री प्रताप सिंह भाटी का निधन जोधपुर में हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से कराया गया जिसमें जोधपुर के सभी समाजों के पदाधिकारी एवं शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने श्रद्धाञ्जलि दी। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की समस्त कार्यकारिणी एवं पदाधिकारियों ने शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की एवं परिवारजनों को यह दु:खद घटना को सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की। -अमरमुनि

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

दि. 18.10.2013 से आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में प्रातः 6:45 से 8:15 बजे तक कार्तिक मासीय यजुर्वेद पारायण प्रारम्भ हुआ। श्री प्रदीप आर्य, बृजेन्द्र आर्य एवं सुरेश चंद गुप्ता सपत्नीक यज्ञ के यजमान रहे। पं. शिवकुमार कौशिक ने यजुर्वेद पाठ एवं वैदिक विधि से यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के ब्रह्म पं. अमरमुनि जी ने आर्य समाज, यज्ञ तथा वेदों के महत्व पर प्रकाश डालकर सभी आर्यजन को लाभान्वित किया। यह यज्ञ एक माह तक प्रतिदिन चलेगा।

– बृजेन्द्र देव आर्य, मंत्री

आर्य सामज अरावली विहार काला कुआँ पर भी इसी प्रकार प्रति दिन एक माह का कार्तिक यज्ञ एवं यजुर्वेद के मंत्रों का भावार्थ प्रातः 8.15 से 9.30 तक निरंतर चल रहा है जिसमें कॉलोनी के अनेकों संभ्रांत परिवार भाग ले रहे है। – धर्मवीर आर्य, मंत्री

आर्य सामज बजाजा बाजार, अलवर में हर वर्ष की भांति एक माह का कार्तिक यज्ञ एवं प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक चल रहा है जिसमें अनेक आर्य परिवार भाग ले रहे है। – रमेश चुघ

झोंपड़ियों में जाकर निर्धनों को कपड़े बांटे

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा कच्ची टापरियों, झोंपड़ियां बनाकर रह रहे निर्धन परिवारों के बच्चे, महिलाएं, पुरुष कपड़े पाकर उनके चेहरों पर बेहद खुशी छा गई।

कच्ची बस्ती के रहवासी निर्धन परिवारों के बच्चों को कपड़े, महिलाओं को साड़ियां, पुरुषों को पेंट-शर्ट जिला सभा की ओर से दिये गये। सभी को बिस्कुट के पैकेट भी बांटे गए। - अर्जुन देव चद्दा

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवंडी कोटा द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन

कोटा 19 अक्टूबर 2013। डीएवी पब्लिक स्कूल में बच्चों का कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें बच्चों ने वीररस, देश भक्ति और विभिन्न कविताओं का पाठ किया। इस कवि सम्मलेन के निर्णायक थे – प्रसिद्ध साहित्यकार – श्री विश्वामित्र दाधीच, डॉ0 प्रेम जैन तथा आर्य समाज, कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्ढा और आर्य समाज, कोटा के मंत्री श्री कैलाश चन्द बाहेती।

इस अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कनिष्ठ वर्ग में प्रथम आदित्य सिंह, द्वितीय आज्ञा गुप्ता, तृतीय कृति विजेता घोषित की गई । वरिश्ठ वर्ग में – तृषा महेश्वरी प्रथम, रिद्धिमा सिंह द्वितीय, श्रृंगारिका तृतीय स्थान पर रहीं। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि श्री विश्वामित्र दाधीच ने अपनी कविता से सभी को मंत्र–मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के अंत में सभी को धन्यवाद देते हुए विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों में सृजनशीलता, भाषा को विकसित कर उनमें आत्मविश्वास का संचार करते है ।

सरिता रंजन गौतम, प्राचार्या

अधिक वर्षा व पर्यावरण रक्षा हेतु पेड़ लगाने की प्रेरणा

विज्ञानवेता महर्षि दयानन्द वैदिक युगपुरुष आज से लगभग एक सौ बीस वर्ष पूर्व स्वरचित पुस्तक 'गो करुणा निधि' के पृष्ठ नौ में लिखते हैं कि प्राचीन आर्यवर्तीय (भारतीय) राजा, महाराजा, प्रधान और धनाढ्यलोग आधी पृथ्वी पर जंगल रखते थे जिससे पशु और पक्षियों की रक्षा होकर औषधियों का सार, दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों। जिनके खाने-पीने से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम आदि सद्गुण बढ़ें। और वृक्षों के अधिक होने से आरोग्य वर्षा, जयवायु में आर्द्रता और वातावरण की शुद्धि अधिक हो। वेद वैज्ञानिक महर्षिदयानन्द आज से एक सौ बीस वर्ष पूर्व ही वातावरण व प्रकृति की रक्षा हेतु पशु-पक्षियों को न मारने और वृक्षों को काटने की अपेक्षा अधिक लगाने की बात करते हैं। भारत सरकार को चाहिए कि इस ओर ध्यान दे और आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द के महान् कार्यो को जनता के समक्ष रखकर वातावरण को बचाने व कृतघ्नता के पाप से बचे। खेद है कि छोटे-छोटे लोगों का तो सरकार विज्ञापन करती रहती है परन्तु उस महान राष्ट्रनायक विश्वमित्र वेदवैज्ञानिक योगीदयानन्द को कम ही याद करती है।

यज्ञ औषधि रूप हैं क्योंकि ऋतु संधियों में उत्पन्न रोगों का नाश करता है।

www.thearyasamaj.org

'अल्पज्ञ'

काफी लम्बे समय से विचारतंत्री उलझी हुई है- कर्मफल की मीमांसा में। अनेक पृष्ठ रंग डाले हैं, अपने विचारों को अभिव्यक्ति देने में, पर कुछ बना नहीं और जब मस्तिष्क में कुछ स्त्रोत खुलता हुआ दिखाई देने लगा तो जीवात्मा की अल्पज्ञता की ओर मन केन्द्रित होने लगा। अतः पहिले अल्पज्ञता पर ही विचार कर लें। जीवात्मा अल्पज्ञ है, यह विद्वानों से वर्षों से सुनते आ रहे हैं। सुनना, समझना थोड़े ही होता है। फिर समझने के बाद हृदयंगम करना, आत्मसात् करना और बात है। केवल परमात्मा सर्वज्ञ है तो उसके विपरीत चेतनप्राणी तो जीवात्मा ही है, फिर वह तो अल्पज्ञ ही हुआ। दो सर्वज्ञ नहीं हो सकते। जीवात्मा की हठधर्मी तो देखिए वह अपने को अल्पज्ञ मानने को तैयार नहीं।

हिन्दी के शब्दकोष में अल्पज्ञ की विभक्ति ''अल्प'' और ''ज्ञ'' दी है। 'अल्प' माने थोड़ा 'ज्ञ' माने जानने वाला अल्पज्ञ माने थोड़ा जानने वाला या नासमझ। जीवात्म अल्पज्ञ है, इसके प्रमाण में हजारों उदाहरण दिये जा सकते हैं। रात्रि में प्रगाढ़ निद्रावस्था में मुझे क्या मालूम कि सुबह देखूँगा भी या नहीं। संत कह गये हैं- नो द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन, रहे अचम्भा जानिए, गए अचम्भा कौन?

जीवात्मा की अल्पज्ञता का प्रश्न गहरा गया। दूधिए लालू जी को यदि 'अल्पज्ञता' का एहसास होता तो वह कभी 950 करोड़ के चारे घोटाले में नहीं फंसते। पन्द्रह वर्षों तक संपूर्ण ऐश्वर्य, राजसी ठाठ भोगने के पश्चात जेल। न एयरकण्डीशन कमरा न सुखदायी गाव-गद्दे, कठोर जमीन और दो कम्बल। एक ओढ़ने को और एक बिछाने को। और जैसे जैसे काली कमाई का पता चलता जावेगा, वैसे -वैसे शासन उस पर कब्जा करता जावेगा। डाकू बाल्मीकि को तो संत मिल गये थे। जिन्होंने उसके 'ज्ञ' को झकझोर दिया। संतों ने कहा- जा, घर जा। परिवार में पूछ ले कि जो चोरी डकैती का पाप कर्म करके उनके लिये धन अर्जित कर रहा है, उस पाप में वह भागी हैं, अथवा नहीं। सभी ने अस्वीकार कर दिया। कह दिया- हमारे भरण पोषण का दायित्व तुम्हारा है। इसे तुम पाप से करते हो या पुण्य से। इससे हमें कुछ लेना देना नहीं। कर्मफल तुम्हें ही भोगना होगा। बाल्मीकि की आँखें खुल गई। संतों को उसने परिवार का कहा सुना दिया और उन्हें बंधन से मुक्त कर दिया।

लालू जी के साथ ऐसा नहीं हुआ। पूरा परिवार, पत्नी जिसे उन्होंने डमी मुख्यमंत्री तक बनवा दिया था, उनको सावधान, सचेत नहीं कर पाई। यह तो हुआ नहीं, बल्कि उस आनन्द में आकण्ठ डूबी रही। राँची की बिरसा मुण्डा जेल में लालू जी अकेले ही गए-सम्पूर्ण नाते-रिश्तेदारों से, पार्टी कार्यकर्ताओं से वियुक्त होकर। क्या इसकी कल्पना उन्होंने चारा घोटाला में लिप्त होने पर की थी? क्या यह जीवात्मा की अल्पज्ञता का प्रमाण नहीं है?

और लीजिये- एक ही दिन में जीवात्मा की अल्पज्ञता के दो प्रमाण मिल गए। 'संत' आसाराम बापू स्वघोषित कृष्णावतार, 2000 युवतियों से रति-सुख उठाने के पश्चात्, नहीं, नहीं उन्हें मोक्ष सुख दिलाने के पश्चात् नपुंसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया से ग्रसित बताए जाने के बाद भी अभी तक जमानत भी नहीं पा सके। यहाँ नंपुसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया की थोड़ी चर्चा की जावे। बापू नंपुसक है, 16 वर्षीया नाबालिग लड़की से बलात्कार नहीं कर सकते, डॉक्टरी जाँच में यह दावा झूठा सिद्ध हुआ। त्रिनाड़ी शूल उपचार नारी वैद्य ही कर सकती है और वह भी परित्यक्ता उनकी शिष्या बताया गया। आयुर्वेद में त्रिनाड़ी शूल कोई बीमारी नहीं है। पीडोफीलिया से ग्रसित व्यक्ति किशोर बालकों से कामवासना तृप्ति चाहता है, करता है। यानी 'बापू' आसाराम को लगभग प्रतिदिन सैक्स की तृप्ति चाहे छूरो हो या गिलमान चाहिए। चाहे उसके लिये अफीम, स्वर्णभस्म और हीरा भस्म का सेवन ही क्यों न करना पड़े। नपुंसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया से ग्रसित बताये जाने के बाद भी अभी तक जमानत भी नहीं पा सके। कारागार की सख्त जमीन पर वह भी दो कम्बलों में पड़े हैं। वैभव की पराकाष्ठा देखिए। पूरे विश्व में 450 आश्रम, लाखों भक्त, लाखों भक्तों की भक्ति देखिए कि वह पूर्णतया आश्वस्त हैं कि 'बापू' निर्दोष है और उन्हें षडयंत्रपूर्वक फंसाया गया है और प्रताड़ित किया जा रहा है। उनकी मुक्ति के लिये जप-जाप चल रहे हैं। प्रदर्शन हुए हैं, जेल के बाहर भी और अन्यत्र भी। व्यक्तिगत अल्पज्ञता और सामूहिक अल्पज्ञता का बेजोड़ उदाहरण मिल गया।

अब आइए, सम्भोग से समाधि तक ले जाने वाले 'भगवान' रजनीश अपना झण्डा गाड़ने अमेरिका-यूएसए गये थे। उन्हें क्या मालूम था कि अमरीका पहिले ही सम्भोग से समाधि या चिर समाधि की ओर अग्रसर है। जेल जाना पड़ा। भक्तों ने प्रधानमंत्री राजीव जी से अनुरोध किया तब ही मुक्त हो कर भारत लौटे फिर पतन गाथा शुरू हुई। यह भी अल्पज्ञ सिद्ध हुए।

प्रखर बुद्धि के धनी मध्यप्रदेश शासन में सर्वोच्च पदों पर आसीन पति-पत्नी युगल अरविन्द जोशी और टीनू जोशी, जो दोनों ही आई.ए.एस. हैं, 42 करोड़ की आय से अधिक सम्पत्ति के मामले में फंसे पड़े है, धन-वैभव व शासकीय पद की गरिमा से मण्डित अब समस्त प्रतिष्ठा गंवा कर धूल-धूसरित हो रहे हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में से दो, लालू जी और जोशी दम्पति में आत्मा के बताये गये छह महाबली शत्रुओं में से केवल लोभ के शिकार हुए और बाकी दो 'संत' आसाराम और 'भगवान' रजनीश काम और लोभ के। इस सूची में मेरी जानकारी के अनुसार उच्चत्तम न्यायालय के न्यायाधीश और हरियाणा के पुलिस महानिरीक्षक महोदय भी आते हैं। थोड़े से प्रयत्न से और जानकारी भी जुटाई जा सकती है।

ये सब उदाहरण भारत के हैं जिन्हें जीवात्मा की अल्पज्ञता का ज्ञान हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत में मिला है। जरा, देखिए तो सही-

1. 'सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं '।
2. 'सब ठाठ धरा रह जाएगा, जब हंसा जाएगा उड़।'
3. मुंज के भेजे गए हत्यारों ने मासूम भोज की हत्या नहीं की उसे बता दिया कि चाचा मुंज ने राज्य के लोभ से उसकी हत्या करने के लिये जंगल में भेजा है। भोज ने कहा कि चाचा को मेरी मृत्यु का समाचार देने से पहिले मेरा संदेश दे देना। भोज ने एक श्लोक लिख भेजा जिसका हिन्दी अनुवाद है-सतयुग का प्रतापी राजा मान्धाता मर गया। समुद्र पर सेतु बाँधने और रावण को मारने वाला राम भी आज कहां हैं? युधिष्ठिर

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

आदि राजा भी स्वर्ग को चले गये। किसी के साथ यह राज्य, यह भूमि नहीं गई। निश्चय ही यह तेरे साथ अवश्य जाएगी। इस श्लोक को पढ़कर मुंज के ज्ञान चक्षु खुल गए।

4. ईशोपनिषद के प्रथम मंत्र में ही कहा गया है कि संसार का समस्त वैभव तेरे लिये है, इसका जमकर भोग कर पर यह सोचकर कि सब उस परमात्मा है-तेन व्यक्तेन भुंजीथा। तेरे साथ कुछ नहीं जाएगा।

5. युधिष्ठिर और यक्ष के संवाद का एक प्रश्न-संसार की सबसे विचित्र बात क्या है? और युधिष्ठिर का उत्तर-संसार की सबसे विचित्र बात यह है कि मनुष्य मृत्यु को रोज देखता है और सोचता है कि यह मरेगा, वह मरेगा पर मैं नहीं। जीवात्मा अल्पज्ञ ही सिद्ध हुआ न।

मनुष्य की बुद्धि को, विवेक को सदैव जागृत रखने का एक ही उपाय है- परमात्मा की शरण और मांगना गायत्री मंत्र के अनुकूल-हे परमात्मा! हमारी बुद्धि को कल्याणकारी मार्ग पर ले चल क्योंकि हमारे काम, क्रोध, लोभ मोह, मद, मत्सर में फंसने के पूरे पूरे चांसेज हैं। हम फसेंगे ही क्योंकि जीवात्मा बना ही इन गुणों से है। प्रयत्न और वैराग्य की राह पर चलने वाली बिरला ही पुण्यात्मा होती है।

मैं अपनी भड़ास निकाल रहा हूँ। मैं स्वयं जीवन भर इनसे मुक्त नहीं हो सका। कितना कीचड़ लपेटा है, इसे मैं या मेरा परमात्मा जानता है, पत्नी भी नहीं। सूरदास के शब्दों में कहना चाहूँगा- अब लौं नसानी, अब ना नसैहों।

अभिमन्यु कुमार खुल्लर, ग्वालियर

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा कार्तिक मास में आयोजित विशेष कार्यक्रम

बड़े हर्ष के साथ आपको सूचित किया जाता है कि आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर का 'वार्षिकोत्सव' एवं 'कार्तिक मासीय यज्ञ' आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के महामंत्री श्री अमर मुनि जी की अध्यक्षता में दिनांक 16 व 17 नवम्बर 2013 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। श्री विद्यासागर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान- प्रान्तीय सभा-राजस्थान), समारोह के संरक्षक एवं श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता (प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर) समारोह के मुख्य अतिथि होंगे।

वेद अधिष्ठाता पं. विनोदी लाल दीक्षित एवं आर्य समाज के पुरोहित पं. शिव कुमार कौशिक जी वैदिक विधि विधान से यज्ञ कार्य सम्पन्न करायेंगे।

इस अवसर पर उच्चकोटि के तपस्वी संत, वैदिक विद्वान तथा भजनोपदेशक अपने सारगर्भित उद्‌बोधन से आपको लाभान्वित करने हेतु पधार रहे है। जिनमें श्री रामपाल जी शास्त्री (व्याख्याता-डी.ए.वी. संस्थान, जयपुर), श्री अमर सिंह आर्य (भजनोपदेशक), आर्य नेता श्री जगदीश आर्य (प्रधान), श्री हरिपाल शास्त्री (मंत्री), श्री धर्मसिंह आर्य (कोषाध्यक्ष) जिला सभा अलवर आदि प्रमुख हैं।

आर्य समाज एक विश्वव्यापी विशाल संगठन है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का उद्देश्य धर्म एवं समाज में व्याप्त अंधविश्वास, आडम्बर एवं पाखण्डपूर्ण कुरीतियों का उन्मूलन कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना एवं गौरवमयी वैदिक संस्कृति को समृद्ध बनाना है। 'वार्षिकोत्सव' जैसे पुनीत आयोजन हमें आपकी सेवा करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करते है। आपकी गरिमामय उपस्थिति से आर्यजन की संगठन शक्ति को बल मिलता है। अतः आप सभी से सविनय निवेदन है कि आर्य समाज के भव्य आयोजनों में सपरिवार पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

कार्यक्रमः

'ऋषि निर्वाण दिवस' एवं 'दीपावली पर्व'
(दिनांक 03 नवम्बर 2013, रविवार)

विशेष यज्ञ ..... प्रातः 7 से 8 बजे तक
भक्ति संगीत ..... प्रातः 8 से 8.30 बजे तक
श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम .....प्रातः 8.30 से 10 बजे तक

'वार्षिकोत्सव'
(दिनांक 16 नवम्बर 2013, शनिवार)

कार्तिक यज्ञ ..... प्रातः 6.45 से 8 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश..... प्रातः 8 से 10 बजे तक
जिला सभा कार्यकर्ता सम्मेलन..... दोप. 2 से 5 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश ..... रात्रि 7 से 10 बजे तक

'कार्तिक यज्ञ पूर्णाहुति' एवं 'वार्षिकोत्सव समापन'
(दिनांक 17 नवम्बर 2013, रविवार)

कार्तिक यज्ञ पूर्णाहुति ..... प्रातः 7.30 से 9 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश ..... प्रातः 9 से 12.30 बजे तक
ऋषि लंगर ..... मध्याह्न 12.30 से 2 बजे तक

- बृजेन्द्र देव आर्य, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।